परमेश्वर का अस्तित्व

बहुत से विचार करने वाले लोग परमेश्वर के अस्तित्व पर विचार करते रहे हैं। यदि उन्होंने संदेह नहीं किया, तो वे कम से कम एक सर्वोच्च जीव के अस्तित्व के प्रमाणों पर चकित तो हुए ही हैं। हमें अपनी आशा का हिसाब देना है (1 पतरस 3:15)।

नास्तिक लोगों का कहना है कि वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व नहीं है। किसी के लिए यह जानना असम्भव है कि परमेश्वर नहीं है। ऐसा कहने के लिए उसे सर्वज्ञ होना पड़ेगा। इस पाठ में एक सर्वोच्च जीव के अस्तित्व पर विश्वास करने के लिए कुछ कारण मिलेंगे।

बाइबल परमेश्वर के अस्तित्व की बात सिखाती है

बाइबल की पहली पुस्तक उत्पत्ति ''आदि में परमेश्वर'' के महान कथन के साथ आरम्भ होती है और सम्पूर्ण पुस्तक उसके अस्तित्व की घोषणा करती है। नि:संदेह, यह तर्क ऐसे व्यक्ति के लिए कोई मायने नहीं रखता जो बाइबल को विश्वसनीय गवाही के रूप में नहीं मानता। परन्तु, जैसे कि हमने पिछले पाठ में यह तथ्य स्थापित किया था कि बाइबल एक योग्य गवाह है, तो इसकी गवाही का कोई प्रभाव है। यह दिखाने के लिए कि बाइबल एक अलौकिक पुस्तक है, इसमें ऐसे तथ्य प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं जिन्हें केवल प्रकाशन के द्वारा ही जाना जा सकता था। क्योंकि हम यह पहले ही प्रमाणित कर चुके हैं कि बाइबल एक अलौकिक पुस्तक है और जहां भी जांच सम्भव है उसमें इसकी प्रमाणिकता सिद्ध हो चुकी है, इसलिए हमें उन मामलों में इसकी गवाही को मानने के लिए तैयार रहना चाहिए जिन्हें हमारी पांच इन्द्रियां नहीं जांच सकती। बाइबल ने एक गवाह के रूप में अपनी योग्यता सिद्ध कर दी है, इसलिए मेरा मानना है कि परमेश्वर के अस्तित्व की घोषणा करके यह सत्य बता रही है। मैं विश्वास करता हूं कि परमेश्वर है।

बहुत सी समर्थक गवाहियां उपलब्ध हैं। इस पाठ के शेष भाग में परमेश्वर के अस्तित्व के उन प्रमाणों की बात की जाएगी जो बाइबल के लिए बाहरी हैं।

प्रकृति एक सर्वोच्च जीव के होने की गवाही देती है

परमेश्वर के ''अनदेखे गुण, ... उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं ...'' (रोमियों 1:20)। भजन लिखने वाले ने कहा था, ''आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाश मण्डल उसकी हस्तकला को प्रकट कर रहा है'' (भजन संहिता 19:1); और ''जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चन्द्रमा और तारागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूं; तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे ... ?'' (भजन संहिता 8:3, 4)। बहुत पहले किए गए दाऊद के सर्वेक्षण की तरह ही हम अद्‌भुत संसार का सर्वेक्षण कर सकते हैं। वास्तव में, अब तो मनुष्य के पास संसार को जानने की उससे भी अच्छी सहूलियतें हैं जो दाऊद के जमाने में नहीं थीं। हर नई खोज परमेश्वर के अस्तित्व के विचार की बात का वजन बढ़ाती है।

एक बात जो सबसे अधिक प्रभावित करती है वह है संसार की विशालता। पृथ्वी जिस पर हम रहते हैं एक बहुत ही विशाल वस्तु है, परन्तु सूर्य के साथ इसकी तुलना करें तो यह केवल एक छोटा सा बिन्दु ही है। सूर्य को दस लाख टुकड़ों में विभाजित कर दिया जाए तो भी प्रत्येक टुकड़ा आकार में पृथ्वी से बड़ा होगा। इस पृथ्वी को सूर्य के प्रकाश तथा गर्मी का केवल बीस करोड़वां भाग ही मिलता है।

पृथ्वी का व्यास पच्चीस हज़ार मील है। सूर्य से इसकी दूरी पृथ्वी के व्यास से चार हज़ार गुणा अर्थात नौ करोड़ बीस लाख मील है। वरुण ग्रह को पच्चीस करोड़ मील दूर या पृथ्वी की सूर्य से दूरी के बीस गुणा दूर माना जाता है। लुब्धक तारा जो आकाश का सबसे चमकीला तारा है, पांच खरब दस अरब मील दूर है। आकाश का तीसरा सबसे अधिक चमकीला तारा अल्फा सेंटौरी दो अरब अर्थात सूर्य से दो लाख पैंतीस हज़ार गुणा दूर माना जाता है। बहुत से आकाशीय पिण्डों की दूरी इतनी अधिक है कि उनकी दूरी और आकार मापने के लिए ''प्रकाश वर्ष'' शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है। उनमें से कई तो पृथ्वी से हज़ारों प्रकाश वर्ष दूर माने जाते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि उन आकाशीय पिण्डों से 1,86,000 मील प्रति सैकेंड की गति से हम तक पहुंचने के लिए प्रकाश को हज़ारों वर्ष चाहिए। खगोल शास्त्रियों के अनुसार सूर्य, ग्रहों और प्राकृतिक उपग्रहों से बना हमारा सौर मण्डल ही केवल अकेला सौरमण्डल नहीं है। वे हमें बताते हैं कि ऐसे लाखों और सौर मण्डल हैं जिनके अपने सूर्य तथा ग्रह हैं।

इन संख्याओं का हमारे लिए कोई अर्थ नहीं है। वे इतने बड़े हैं कि हमारी पकड़ से बहुत दूर हैं, परन्तु इनसे हमें संसार की विशालता का ज्ञान होता है। मनुष्य द्वारा की गई खोजों पर विचार करके हम सचमुच प्रभावित होते हैं; जबकि परमेश्वर के कामों के तो किनारे की ही खोज की गई है। किसी ने, संसार की महानता पर ज़ोर देते हुए कहा है: ''यह पृथ्वी जिस पर हम गुज़रते हैं यदि गैसों में बदल जाए तो सृष्टि की हानि उतनी ही होगी जितनी फैले हुए जंगल में एक पत्ता गिरने से हो सकती है।''

इतना विशाल संसार चीख-चीखकर परमेश्वर के होने की घोषणा करता है। आकाश

मण्डल लगातार परमेश्वर के अस्तित्व, सामर्थ, बुद्धि और भलाई का शोर मचाते हैं। उनकी गवाही केवल संकेत ही नहीं है; यह तो एक ऐलान है। आपने ईश्वरीय उत्कृष्टता को देखना हो, तो तारों से भरे आकाश को ध्यान से देखें। यदि आपने अनन्ततः, बुद्धि व ईश्वरीय सच्चाई को देखना हो, तो तारों के संतुलन पर विचार कीजिए और ग्रहों की गति की निरन्तरता को चिह्नित कीजिए। वे केवल परमेश्वर की ही महिमा का वर्णन करते हैं! वे हमें एक बुद्धिमान, विवेकी, नियन्त्रण रखने वाले और सब पर प्रधानता करने वाले सृष्टिकर्त्ता के पक्ष में ऐसे तर्क देते हैं जिनका कोई उत्तर नहीं है। उनकी गवाही सब भाषाओं में दी जाती है; और वे ऐसे गवाह हैं जिनकी न तो हत्या ही की जा सकती है और न ही उन्हें किसी प्रकार से चुप कराया जा सकता है।

कुछ है, और वह शून्य से नहीं आ सकता। इसलिए वह कुछ सदा से ही है। बाइबल उस ''कुछ'' को परमेश्वर कहती है।

उत्पत्ति के प्रश्न का एकमात्र तर्कसंगत उत्तर केवल समझदार सृष्टि ही है

मनुष्य का तर्क है, ''इस अद्‌भुत संसार की उत्पत्ति कैसे हुई है?'' इसके केवल दो ही सम्भावित उत्तर हैं: संयोग या समझदारी से सृष्टि की रचना। क्या हम यह मान सकते हैं कि यह सृष्टि संयोग या किसी दुर्घटना का परिणाम है? इतना भोला कौन है जो मान ले कि इतना अद्‌भुत और विशाल संसार जिसकी हम बात कर रहे हैं केवल संयोग से ही बना? कुछ कभी भी शून्य से नहीं आ सकता। परिणाम के लिए कोई कारण अवश्य चाहिए। मैं यह विश्वास नहीं कर सकता हूं कि यह भौतिक संसार केवल संयोग से बना है। आइए इस विश्वास के कारणों पर विचार करें कि यह संसार समझदारी से की गई रचना का परिणाम है।

पहला, असंख्य खनिजों तथा जीवन के विभिन्न रूपों को बनाने में विभिन्न तत्वों की उचित मात्रा का मेल सशक्त तर्क देता है कि इनको मिलाने वाला और इनका प्रबन्ध करने वाला कोई है। संसार में अब तक 112 तत्वों का पता चल चुका है। हम जो कुछ भी देखते हैं वह इन विभिन्न तत्वों से ही बना है। कुछ निश्चित तत्वों को एक विशेष अनुपात में मिलाने पर वस्तुओं के कुछ विशेष रूप बन जाते हैं। दो भाग हाईड्रोजन को एक भाग ऑक्सीजन से मिलाने पर पानी बन जाता है। सोडियम के साथ क्लोरीन की बराबर मात्रा मिलाने पर खाने वाला नमक बन जाता है। इसे समझने के लिए, वर्णमाला के अक्षरों पर विचार कीजिए। इन्हें बनाने के लिए विभिन्न स्थानों पर अलग-अलग मिलाया जा सकता है। शब्दों को कविता, गद्य, युद्ध की घोषणा, शान्ति की घोषणा, समाचार पत्र के लेख या साहित्य की किसी भी प्रकार की रचना के लिए मिलाया जा सकता है। परन्तु, इन अक्षरों और शब्दों को बिना किसी समझदारी के इस्तेमाल करना असम्भव होगा। क्या हम मान सकते हैं कि संयोग से वर्णमाला के अक्षर एक से दूसरे स्थान पर लग जाएं और शेक्सपीयर का नाटक तैयार हो जाए? वास्तव में, हम ऐसा नहीं मान सकते, फिर भी, यह कल्पना करना उतना ही तर्कसंगत होगा कि तत्व के विभिन्न मित्रणों जिनसे संसार बनता है, संयोग

या किसी दुर्घटना का फल हैं! ऐसा नहीं हो सकता!

दूसरा, हम संसार में अपने बारे में सूझ-बूझ के साथ योजना तथा डिज़ाइनिंग को देखते हैं। यह डिज़ाइन प्रकृति की छोटी से छोटी वस्तुओं में भी दिखाई देता है। बर्फ के प्रत्येक कण का डिज़ाइन पूरी तरह से सही है। घास की प्रत्येक पत्ती एक सुव्यवस्थित रसायन प्रयोगशाला है। मानवीय शरीर जिनमें हम वास करते हैं एक ऐसा डिज़ाइन है जो अलौकिक है। एक सचेत आलोचक भजन लिखने वाले के साथ भौतिक शरीर के साथ चिल्ला उठने के बिना शारीरिक रचना पर विचार नहीं कर सकता, ''मैं भयानक और अद्‌भुत रीति से रचा गया हूं'' (भजन संहिता 139:14)। दो सौ हड्डियां, पांच सौ मांसपेशियां और हज़ार जोड़ जो उन्हें बांधे रखते हैं, सुव्यवस्थित योजना तथा डिज़ाइन का सम्पूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। हज़ारों नसें, हज़ारों रक्तवाही शिराएं, धमनियां और हज़ारों ग्रन्थियां, जो मिलकर शरीर की भलाई के लिए सक्रिय हैं और कार्य करती हैं, सोच समझ कर बनाए डिज़ाइन का चित्र प्रस्तुत करती हैं। यह संयोग से नहीं हो सकता था। मानवीय आंख की जटिलताओं से इतनी सामग्री मिली है कि उससे विज्ञान की बहुत सी पुस्तकें लिखी जा सकती हैं। आंख ऐसे डिज़ाइन को प्रकट करती है जिसे केवल वही बुद्धिमान सृष्टिकर्त्ता बना सकता है जिसका अस्तित्व हो। लोग जीवन भर शरीर के इस एक अंग का अध्ययन करके भी मानते हैं कि अभी भी बहुत कुछ ऐसा है जिसका उन्हें ज्ञान नहीं है।

मानवीय शरीर के दूसरे अंगों के बारे में भी यही बात कही जा सकती है। निस्संदेह, भौतिक शरीरों का डिज़ाइन केवल मनुष्यों से ही जुड़ा हुआ है। हमारे आस-पास असंख्य ऐसे जीव-जन्तु हैं जो परमेश्वर के अस्तित्व का तर्क देते हैं और उसका कोई उत्तर नहीं। आकाश में उड़ने वाले पक्षियों को उनके जीवन क्षेत्र में जीने के लिए आवश्यक उपकरण उपलब्ध करवाए गए हैं। समुद्र में तैरने वाली मछली को उस वातावरण के अनुकूल ही शारीरिक बनावट दी गई है। जीवन का प्रत्येक रूप और यहां तक कि निर्जीव वस्तुएं भी पुकारती हैं और एक ऐसे कलाकार की, जो कि बुद्धिमान है, गवाही देती हैं।

तीसरा, संसार में कानून व्यवस्था का अस्तित्व भी एक समझदार सृष्टि के पक्ष में तर्क देता है। सुव्यवस्थित ढंग से अपनी परिक्रमा में घूमने वाले ग्रह एक दूसरे से बड़े सही ढंग से समायोजित हैं। पृथ्वी अपनी धुरी के इर्द-गिर्द चौबीस घण्टे घूमती है। साथ ही, यह 72,600 मील प्रति घण्टे की गति से सूर्य के इर्द-गिर्द घूमती है। यह हमेशा कार्य करती रहती है! यह एक नियम के अनुसार घूमती है। ऐसे नियम प्रत्येक क्षेत्र में मिलते हैं। ये नियम इतने अपरिवर्तनशील हैं कि आकाशीय पिण्डों को लगने वाले ग्रहणों की समय सहित भविष्यवाणी की जा सकती है। सृष्टि के नियम लागू होते हैं! कड़वे अनुभव से मनुष्य ने सीख लिया है कि परिणाम भुगते बिना वह प्रकृति के नियमों को तोड़ नहीं सकता। जब भी कोई प्राकृतिक नियम तोड़ा जाता है तो बिना दया किए उससे घाव भी मिलता है। ऐसा नियम तथा व्यवस्था संयोग से नहीं बने हैं। अवश्य ही इन कानूनों को बनाने वाला कोई है! फिर, इन कानूनों को लागू करने के योग्य एक शक्ति भी होनी आवश्यक है, और वह शक्ति समझदार तथा बुद्धिमान होनी चाहिए। संसार के नियम गवाही देते हैं कि एक सर्वोच्च शक्ति है जिसने उन्हें

बनाया और उन्हें स्थिर रखती है।

चौथा, जीवन का अस्तित्व एक जीवित परमेश्वर के अस्तित्व को बताता है। जीवन का मूल क्या है? जीवन, जीवन से निकलता है, इसलिए अवश्य ही उसमें जीवन था। उसी को तो मैं परमेश्वर कहता हूं। जीवन तथा इसकी उत्पत्ति की एकमात्र मान्य व्याख्या तो वही है। जीवन के रहस्य की समझ की खोज में, अन्ततः हमें उसी के पास आना होगा। उसके आगे हम नहीं जा सकते। जीवन संयोग से ही नहीं मिलता। यह अपने आप भी कार्य नहीं करता। इसे देने का अवश्य ही कोई परम उद्देश्य है।

सारांश

परमेश्वर के कामों का सर्वेक्षण करते हुए हम दाऊद के साथ यह कहने को विवश हो जाते हैं, ''मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, ... ?'' (भजन संहिता 8:4)। मनुष्य तो केवल एक कण है जो केवल एक कण पर रह रहा है, फिर भी परमेश्वर ने अपनी दिलचस्पी चमकने वाले तारों में दिखाने के बजाय मनुष्य में दिखाई है। क्यों? क्योंकि मनुष्यों को परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया था और इसलिए कि मनुष्य अनन्त अर्थात सदा तक रहने वाला है। इस संसार के जल जाने के बाद भी, मनुष्य संसार के मलबे पर जीवित रहेगा।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि मैं परमेश्वर में विश्वास करता हूं। ऐसे व्यक्ति पर मुझे तरस आता है जो परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता, जो परमेश्वर को जानता नहीं। जिन्होंने उसे पा लिया है और जो उसे जानते हैं वे यह गवाही दे सकते हैं कि वह सामर्थ का सबसे बड़ा स्रोत है जिसका उन्हें पता चला या जीवन के संघर्षों पर विजय पाकर अनुभव किया है। आकाश और पृथ्वी जो उसके हाथों की कारीगरी है, एक दिन नाश हो जाएंगे, परन्तु वह है और सदा तक रहेगा। ''तू वही है, और तेरे वर्षों का अन्त नहीं होने का'' (भजन संहिता 102:27); ''इससे पहले कि पहाड़ उत्पन्न हुए, वा तू ने पृथ्वी और जगत की रचना की, वरन अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही ईश्वर है'' (भजन संहिता 90:2)। बदलाव तथा परिवर्तन के इस समय में, नाश तथा विनाश के इस संसार में, मैं आपसे बिनती करता हूं कि आप उसका न बदलने वाला हाथ थाम लें।